17 मई 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 4 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में -

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का 125वाँ जन्म जयन्ती महोत्सव

(1) जयपुर (राज.): ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती ज्ञानाराधनापूर्वक मनाई गई और इसी के साथ वर्षभर चलने वाले 125वें जन्म जयन्ती वर्ष के विविध कार्यक्रमों का भव्य शुभारंभ हो गया। ज्ञातव्य है कि इस शृंखला में आगामी एक वर्ष तक जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में गुरुदेवश्री के विचक्षण योगदान को प्रकाशित करने वाले अनेक उच्चस्तरीय आयोजन किये जायेंगे। 1 मई को आयोजित इस कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि विद्वान वक्ताओं ने गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित जिनवाणी के मार्मिक सिद्धान्तों और गुरुदेवश्री की रीति-नीतियों के बारे में शोधपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका आदि महानुभाव मंचासीन थे।

डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि गुरुदेवश्री द्वारा बताया गया तत्त्वज्ञान जीवन में उतारें एवं उसका जन-जन में प्रचार-प्रसार हो, तभी जन्मजयंती मनाना सार्थक होगा।

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने कहा कि कानजीस्वामी द्वारा बताये क्रमबद्धपर्याय सिद्धांत से हमारा जीवन बदल गया।

ब्र. यशपालजी ने कहा कि कानजीस्वामी के सानिध्य के साथ-साथ उनके द्वारा बताया तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ, यह बहुत सौभाग्य की बात है।

पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने कहा कि कानजीस्वामी का यह अनंत उपकार है कि उन्होंने सर्वज्ञ द्वारा प्रणीत तत्त्वज्ञान बताया। यदि वे नहीं होते तो हमें यह अपूर्व तत्त्वज्ञान नहीं मिलता।

पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि संसार की परम्परा संसार में भ्रमाती हैं, संसार की परम्परा का पालन करते हुये मोक्ष नहीं पाया जा सकता है, पू. गुरुदेवश्री मुमुक्षु थे इसलिये उन्होंने संसार की परम्परा का पालन नहीं किया। वे कुल की परम्परा छोड़कर साधु हो गये और साधु होकर भी पन्थ की परम्परा उन्हें बांध न सकी, उन्हें सत्य मार्ग मिला तो उन्होंने वह अपना लिया।

पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि लौकिक शिक्षा कम प्राप्त करने पर भी गुरुदेवश्री ने अलौकिक विद्या में स्वयं पारंगत होकर हमें भी यह विद्या प्रदान की, यह हमारे लिये गौरव की बात है।

पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने स्वामीजी के जीवन को चरणानुयोग और करणानुयोग की अद्भुत संधि बताते हुए उसका अनुकरण करने की प्रेरणा दी।

इसप्रकार अनेक विद्वानों व महानुभावों ने अपने वक्तव्य में कानजीस्वामी के प्रति अत्यंत बहुमान का भाव व्यक्त किया एवं रूपेन्द्र जैन छिन्दवाडा, मयंक ठगन टीकमगढ, साकेत जैन जयपुर, विवेक जैन अमरमऊ आदि विद्यार्थियों ने कविता पाठ के माध्यम से गुरुदेवश्री के प्रति बहुमान का भाव व्यक्त किया।

इस अवसर पर रात्रि में प्रवचन के स्थान पर गुरुदेवश्री के जीवन वृत्त पर आधारित 45 मिनिट की फिल्म दिखाई गई।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित गोम्मटेशजी चौगुले एवं संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा जयपुर महानगर द्वारा- टोडरमल स्मारक भवन में गुरुदेवश्री की 125वीं जन्मजयन्ती गुणानुवाद सभा के रूप में मनाई गई।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा **'आत्मानुभव कैसे और कब'** विषय पर रहस्यपूर्ण चिट्ठी के आधार से प्रवचन का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त अन्य वक्ताओं में पण्डित राजेशजी शास्त्री, डॉ. भागचंदजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री इत्यादि विद्वानों ने गुरुदेवश्री द्वारा बताये तत्त्वज्ञान को जीवन में उतारने एवं जन-जन में प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लिया।

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

सम्पादकीय –

कुछ अनछुए पहलू

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

महिला मंडल के मंच से आयोजित महावीर जयंती के दो दिवसीय मंगल महोत्सव के प्रारंभ में मंच की संचालिका ज्योत्स्ना जैन ने आज के अध्यक्ष को मंच पर आने का आह्वान करते हुए कहा ह्न ''इस वर्ष हम इस अवसर पर विविध कार्यक्रमों द्वारा भगवान महावीर द्वारा निरूपित उन अनछुए महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे जो आम जनता में अबतक चर्चित ही नहीं हुए। अबतक अधिकांश भगवान महावीर और उनकी अहिंसा विषय पर ही बोला जाता रहा है।

यदि हमें नर से नारायण ही नहीं, बल्कि पशु से परमात्मा बनने की प्रक्रिया जानना है तो भगवान महावीर के जीवन दर्शन को देखना होगा, एतदर्थ उनके दस भव पीछे जाकर हम उनकी सिंह पर्याय की जीवन शैली की कल्पना करें, जब उस सिंह के पंचेन्द्रिय जीवों के प्राणघात किए बिना पेट भरना भी असंभव था; क्योंकि सिंह के प्रकृति से ही न तो ऐसे दाँत होते हैं, जिनसे कि वह घास चबा सके और न ऐसी आँत ही होती है जिससे कि शाकाहार को पचा सके और उस खूंखार प्राणी को रोज–रोज रोटियाँ कौन दे? इस कारण उदरपोषण के लिए मांसाहार उसकी तो मजबूरी थी।

मांसाहारी पशुओं की मजबूरी की बात तो समझ में आती है, परन्तु यह समझ में नहीं आता कि मनुष्य को ऐसी क्या मजबूरी है जो मांसाहार एवं मांसाहार जैसे अन्य अभक्ष्य पदार्थ खाता है। यह तो प्रकृति से ही शाकाहारी है। किसी कवि ने बहुत अच्छा लिखा है ह्न

'मनुज प्रकृति से शाकाहारी, मांस उसे अनुकूल नहीं है।
पशु भी मानव जैसे प्राणी, वे मेवा फल–फूल नहीं है।।'

खैर ! मैं तो महावीर भगवान के दस भव पूर्व सिंह पर्याय की बात कह रही हूँ। सिंह जैसी क्रूर पर्याय में आत्मकल्याण के हेतुभूत सद् निमित्तों की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती; फिर भी उसकी भली होनहार से आकाशमार्ग में गमन करते हुए दो मुनिराजों ने सिंह को देखा और उसे निकट भव्य जानकर वे उसे संबोधनार्थ नीचे उतरे। उस समय सिंह के मुँह में माँस था, हाथ खून से लथ–पथ थे। सौभाग्य से उसे आकाशमार्ग से उतरते हुए मुनिराजों के दर्शन हुए तथा संबोधन प्राप्त होने से उसका जीवन धन्य हो गया। उसकी आँखों से पश्चात्ताप की अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। उसने आजीवन मांसाहार के त्याग का संकल्प कर लिया। वही जीव आगे चलकर महावीर बना.....।''

इसप्रकार भाषणों के प्रवर्तन के पूर्व श्रीमती ज्योत्स्ना ने भगवान महावीर के सिंह की पर्याय से लेकर महावीर तक के जीवनदर्शन का सामान्य परिचय देते हुए घोषणा की कि आगामी दिनों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता एवं लघु नाटिका आदि कार्यक्रम होंगे। जिनके विषय होंगे ह्न वस्तुस्वातंत्र्य की सिद्धि में चार अभाव, षट्कारक। वस्तुत: वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त मोक्ष महल की नींव का पत्थर है और मोक्षमार्ग का मूल आधार भी है।

इन विषयों से अन्य जन तो अपरिचित हैं ही, महावीर के अधिकांश अनुयायी भी भलीभाँति परिचित नहीं है, अत: इन विषयों पर आधारित कार्यक्रम रखे गये हैं।

ज्योत्स्ना ने कहा ह्न ''मैं सर्वप्रथम **'चार अभाव के माध्यम से वस्तुस्वातंत्र्य'** की सिद्धि पर प्रकाश डालने के लिए अनेकान्त शास्त्री को आमंत्रित करती हूँ, कृपया अनेकान्तजी पधारें और विषय का प्रवर्तन करें।''

महावीर जयन्ती की पूर्व संध्या में गोष्ठी की प्राथमिक औपचारिकताओं के पश्चात् अनेकान्त शास्त्री ने मंचासीन महानुभावों एवं सभासदों को संबोधित करते हुए विषय का प्रवर्तन किया।

उन्होंने कहा ह्न ''यद्यपि आज के भाषण प्रतियोगिता का विषय 'चार अभाव' आम सभाओं में अचर्चित रहने से नवीन श्रोताओं को नया सा लगेगा; परन्तु भगवान महावीर की अहिंसा और अपरिग्रह की बहुचर्चित बात इस विषय को जाने बिना अधूरी ही रह जाती है; क्योंकि अहिंसा और अपरिग्रह तो धर्मवृक्ष के फल हैं, मोक्ष महल के कंगूरे हैं। धर्मवृक्ष की जड़ या मोक्षमहल की नींव का पत्थर तो वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त है, जिस पर मोक्षमहल अनन्तकाल तक खड़ा रहता है। जैसे नींव के बिना महल की एवं कंगूरों की कल्पना भी नहीं की जा सकती, उसीप्रकार वस्तु स्वातंत्र्य को तथा वस्तु के भाव–अभाव, सत्–असत्, एक–अनेक, चित्–अचित्, नित्य–अनित्यादि धर्मों को जाने–समझे बिना मोक्षमहल की प्रथम सीढी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति भी नहीं होगी और प्रथम सीढी के बिना अहिंसा एवं अपरिग्रहरूप कंगूरों सी शोभा कहाँ–कैसे होगी ? वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त की श्रद्धारूप सम्यग्दर्शन रूपी धर्मवृक्ष के बिना अहिंसा और अपरिग्रह के फल कहाँ फलेंगे ?

यहाँ ज्ञातव्य है कि वस्तुस्वातंत्र्य और अभावों का अतिनिकट का संबंध है। अधिकांश जैनेतर दर्शनों में 'अभाव' नामक सिद्धान्त की चर्चा है, परन्तु वह चर्चा वस्तुस्वातंत्र्य की नींव का पत्थर नहीं बन सकी; क्योंकि वे अपने मूल उद्देश्य तक नहीं पहुँचे, जबकि यह भी धर्मोपलब्धि में उपयोगी विषय है। इसे भी जन–जन का विषय बनाना ही होगा, अन्यथा धर्माचरण सार्थक नहीं हो सकेगा।''

जिनसेन ने बीच में ही प्रश्न किया ह्न ''अनेकान्तजी ! मैंने अबतक यह तो सुना था कि हिन्दुस्तान में हिन्दूधर्म के सिवाय, बौद्ध धर्म, जैनधर्म,

ईसाईधर्म और इस्लाम धर्म आदि अनेक धर्म और उनके अनेकानेक भेद–प्रभेद हैं, पर ये नित्य–अनित्य, भाव–अभाव आदि धर्मों के नाम मैंने कभी नहीं सुनें। ये भाव–अभाव धर्म क्या है ? मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आया।''

अनेकान्तजी ने उत्तर दिया ह्न ''अरे भाई ! तुम भगवान महावीर के भक्त होकर इतना भी नहीं जानते? तुम जिन धर्मों की बात कर रहे हो ह्न ये कोई धर्म नहीं हैं, ये तो सम्प्रदाय हैं। इनमें कुछ तो व्यक्तियों के नाम पर हैं और कुछ मान्यताओं के आधार पर हैं। जैसे जैनधर्म, बुद्ध धर्म, ईसाई धर्म, सिख धर्म, इस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म आदि। वस्तुत: अनादिनिधन सनातन धर्म तो वस्तुओं का स्वभाव है। इसी संदर्भ में अनन्तधर्मात्मक वस्तु को अनेकान्त कहते हैं। यह अनेकान्त वस्तु का धर्म है। जिस वस्तु में अनन्त धर्म पाये जायें, वह वस्तु अनेकान्तस्वरूप है, अनन्तधर्मात्मक है, इस वस्तुधर्म के परस्पर विरोधी जोड़े होते हैं। जैसे नित्य–अनित्य, एक–अनेक, भिन्न–अभिन्न, सत्–असत्, तत्–अतत्, भाव–अभाव आदि।

जिसप्रकार स्व की अपेक्षा से सद्भाव धर्म है, उसीप्रकार पर की अपेक्षा से अभाव भी पदार्थ का सद्भावरूप धर्म है। इस अभाव धर्म के सद्भाव के कारण ही सब वस्तुएँ अपने–अपने अस्तित्व में जुदी–जुदी रहती हैं। यदि यह अभावधर्म न होता तो सब वस्तुएँ मिलकर एकमेक हो जातीं, सर्व वस्तुएँ सर्वात्मक हो जाती।

'अभाव' की परिभाषा करते हुए आचार्य ने बताया है कि ह्न ''किसी एक पदार्थ का अन्य पदार्थों में न होना 'अभाव' है। यद्यपि यह 'अभाव' नामक वस्तुधर्म छहों द्रव्यों में सद्भावरूप से ही विद्यमान है, परन्तु परद्रव्य की अपेक्षा से देखें तो स्व–वस्तु परवस्तु नहीं है। इसप्रकार एक द्रव्य का अस्तित्व दूसरे द्रव्य में न होना ही अभाव है। प्रत्येक द्रव्य में एक ऐसी 'अभावशक्ति' का सद्भाव है कि जिसकी वजह से परद्रव्य का उसमें प्रवेश नहीं होता।

ये अभाव चार प्रकार के होते हैं ह्न १. प्राक् अभाव, २. प्रध्वंश अभाव, ३. अन्योन्य अभाव और ४. अत्यन्त अभाव।

प्रथम दो अभावों की परिभाषायें इसप्रकार हैं ह्न उत्पत्ति से पूर्व कारण में कार्य का अभाव प्राक् अभाव या प्रागभाव है अर्थात् पूर्व पर्याय में वर्तमान पर्याय का अभाव प्रागभाव है। इसीप्रकार वर्तमान पर्याय का आगामी पर्याय में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

उदाहरणार्थ हम भगवान महावीर स्वामी की तीन पर्यायें पकड़ें ह्न १. मारीचिरूप भूतकाल की पर्याय २. सिंह की वर्तमान पर्याय और ३. भविष्य की महावीर पर्याय। इनके बीच में हुई पर्यायों को बिलकुल गौण कर दें, फिर देखें कि वर्तमान सिंह पर्याय का भूतकाल में हुई मारीचि पर्याय में जो अभाव है, वह प्रागभाव है। इसीप्रकार सिंह की पर्याय का महावीर की पर्याय में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

दूसरा उदाहरण : दही (वर्तमान पर्याय) दूध (भूतकाल की पूर्व पर्याय) तथा छांछ (भविष्य की पर्याय) को देखें।

दही वर्तमान पर्याय का पूर्व दूध की पर्याय में अभाव प्रागभाव है। उसी दही पर्याय का आगामी छांछ की पर्याय में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

आत्मा पर घटायें तो आत्मा के जो छहढाला में तीन भेद हैं ह्न १. बहिरात्मा, २. अन्तरात्मा और ३. परमात्मा। अन्तरात्मा वर्तमान पर्याय का पूर्व पर्याय बहिरात्मा में अभाव प्रागभाव और आगामी परमात्मा पर्याय में अन्तरात्मा का अभाव प्रध्वंसाभाव है।

प्रथम तीन अभाव ह्न प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव एवं अन्योन्याभाव वस्तु के पर्याय स्वभाव पर लागू होते हैं और वे पर्याय की स्वतंत्रता को प्रगट करते हैं। अन्तिम अत्यन्ताभाव दो भिन्न–भिन्न द्रव्यों पर लागू होता है एवं द्रव्यों की स्वतंत्रता को बताता है।

प्रागभाव बताता है कि एकसमयवर्ती वर्तमान पर्याय का सद्भाव या अस्तित्व मात्र वर्तमान समय में ही है। उसी द्रव्य की निकटवर्ती भूत व भावी पर्यायों में उसकी उपस्थिति न होने से उसके द्वारा उनका कुछ भी भला–बुरा करने एवं सहायरूप होने आदि में कुछ भी योगदान संभव नहीं है। अत: वर्तमान पर्याय न तो अपनी द्रव्य का ही भूत व भावी एकक्षणवर्ती पर्यायों में कुछ परिवर्तन या हस्तक्षेप कर सकती है और न वे एक ही द्रव्य की भूत व भावी पर्यायें वर्तमान पर्याय में हस्तक्षेप या सहयोग कर सकती हैं। अत: प्रत्येक द्रव्य की एकसमयवर्ती पर्याय पूर्ण स्वतंत्र है, इसप्रकार प्रागभाव व प्रध्वंसाभाव वर्तमान पर्याय की स्वतंत्रता बताकर वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त का पोषण करते हैं। तथा तीसरा ह्न अन्योन्याभाव केवल पुद्गल द्रव्य की दो वर्तमान पर्यायों पर लागू होता है। एक पुद्गलद्रव्य की वर्तमान पर्याय का दूसरे पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय में अभाव को अन्योन्याभाव कहते हैं। यह परमाणु–परमाणु की स्वतंत्रता की घोषणा करता है। चौथा ह्न अत्यन्ताभाव एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में अभाव बताकर प्रत्येक द्रव्य का स्वतंत्र अस्तित्व कायम रखता है। प्रत्येक द्रव्य सदैव एकत्व स्वरूप में रहता है। अपने स्वभाव को कभी नहीं छोड़ता और अपना स्वभाव छोड़े बिना तथा अन्यरूप हुए बिना अन्य का कार्य करना संभव नहीं है, क्योंकि इनमें परस्पर में अत्यन्ताभाव की वज्र की दीवार खड़ी है। इस अत्यन्ताभाव को जानने एवं इसकी श्रद्धा से धर्मसंबंधी लाभ यह है कि जब दो द्रव्यों में अत्यन्त अभाव विद्यमान है तो फिर अन्य द्रव्य मेरा भला–बुरा कैसे कर सकता है ? अत: न दूसरों से भय रहता है और न दूसरों से सुख की आशा ही रहती है।

इसप्रकार अभाव के चारों भेद वस्तुस्वातंत्र्य की सिद्धि करते हैं। जो इन्हें समझ कर इनकी प्रतीति करते हैं। श्रद्धा करते हैं, वे अल्पकाल में ही राग–द्वेष से मुक्त होकर वीतरागी बन जाते हैं।

(क्रमश:)

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 125वें जन्म जयन्ती वर्ष के अवसर पर –

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का महा अभियान : समस्त मुमुक्षु समाज को शामिल होने का आह्वान –

आवो मारी साथे (मेरे साथ चलिए)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

(महामंत्री–अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन)

''अपने प्रियजनों को सन्मार्ग पर लायें''!

जरा कल्पना तो कीजिये कि यदि उन्होंने आपके साथ यह न किया होता तो क्या होता ?

क्या हम भी यूं ही मात्र विषय–कषाय में रचपचकर अपना वक्त बर्बाद नहीं कर रहे होते ?

यह तो तय है कि यदि आज हम आत्मकल्याण के मार्ग पर लगे हैं तो एक न एक दिन कोई न कोई हमारी अंगुली पकड़कर हमें इस मार्ग पर लाया होगा, किसी न किसी ने तो हमारी पात्रता को पहिचानकर अत्यन्त करुणाबुद्धि पूर्वक हमें इस मार्ग पर लगाया होगा न ?

तब क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं कि हम उनके इस कार्य को आगे बढाकर उनका कर्ज चुकाएं, **हम भी अन्य भव्य जीवों को इस मार्ग पर लाकर उनके कल्याण में निमित्त बनें ?**

विषय भोगों और संसार बढाने की अन्य गतिविधियों का ज्ञान और प्रेरणा तो हम अपने साथियों को अक्सर देते ही रहते हैं, इस कार्य में तो हममें से कोई भी पीछे नहीं है, तब सन्मार्ग के मामले में ही हम पीछे क्यों रहें ?

यह योजना अपने बन्धु–बांधव, सम्बन्धियों, मित्रों, सहकर्मियों और सहचारियों को आत्महित के मार्ग में लगाने के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई है। यह हमारी स्वाभाविक वृत्ति है कि हमें जो हितकारी लगता है, हम स्वयं तो वह करते ही हैं साथ ही अपने स्वजनों को भी वह करने की प्रेरणा देते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कहा करते थे कि यदि किसी कौए को कहीं भोजन सामग्री मिल जाए तो पहिले वह कांव–कांव करके अपने साथियों को बुलाता है और फिर उनके साथ भोजन करता है। **हमें यह कल्याणकारी मार्ग मिला और हम अपने स्वजनों को इस मार्ग पर न लगाएं तो क्या हम उन कौओं से भी गये बीते नहीं कहलायेंगे ?**

हम सभी आत्मार्थी लोग निश्चित ही जगत में विरले हैं, हमारा चरित्र, नीति, व्यवहार और जीवन–शैली अन्य लोगों से भिन्न, शुद्ध, सात्विक और प्रभावशाली है। ऐसे में अमूमन आपके साथ ऐसा होता ही होगा कि लोग आपसे पूछते होंगे कि ''आपके इस शान्त और गरिमापूर्ण जीवन का राज क्या है ?''

बस ! आपका काम हो गया; **आप उन्हें इस वास्तविकता से परिचित करवाइये कि यह अध्यात्म का मार्ग आपके सुख और शान्ति का रहस्य है और उन्हें भी इस मार्ग पर लगने की प्रेरणा दीजिये; इतना ही नहीं अंगुली पकड़कर उन्हें इस मार्ग पर ले आइये।**

बात जितनी अधिक हितकारी हो और स्वजन जितना अधिक निकट का हो हमारी प्रेरणा उतनी ही अधिक प्रबल होती है और कभी–कभी तो वह आदेश और दबाव (बाध्य करने) की स्थिति तक भी पहुँच जाती है, हमें भी यही करना पड़े तो यह उचित नहीं है।

हमारी यह योजना किसी को किसी लौकिक कार्य या लाभ के लिये प्रेरित करने के लिये नहीं वरन् आत्मकल्याण के लिये प्रेरित करने की है।

उक्त योजना के अंतर्गत आपसे हमारी अपेक्षा है कि आप जब, जहाँ, जिसप्रकार, जिस ग्रंथादिक का स्वाध्याय करते हैं अपने स्वजनों और अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उसमें जुड़ने के लिये प्रेरित करें।

अपने संपर्क में आने वाले स्वजनों को एक बार, बस एक बार अपने साथ, अपने नगर में चलने वाले सामूहिक स्वाध्याय, प्रवचन आदि के कार्यक्रम में शामिल होने की प्रेरणा दें और प्रयत्नपूर्वक उन्हें वहाँ अपने साथ ले जाएँ, अन्य स्वाध्याय प्रेमी बन्धुओं से उनका परिचय करवायें, उन्हें सत्साहित्य उपलब्ध करवायें, आध्यात्मिक प्रवचनों की सी.डी. आदि उपलब्ध करवायें, उनकी शंकाओं और आशंकाओं को दूर करने के प्रयास करें और उन्हें सन्मार्ग पर लगने के अवसर और साधन उपलब्ध करवा दें।

माँ जिनवाणी की बात, आचार्य भगवंतों द्वारा कही गई बात हमारे हित की बात है, हम सभी के ही हित की बात है और हमारा यह दृढ विश्वास है कि शायद ही कोई अभागा होगा कि जिसके कान में एक बार भी यह बात पड़ जाए तब भी वह इससे विमुख ही बना रहे। **बस एक बार यह बात कान में पड़ना दुर्लभ है और हमारा प्रयत्न हो कि यह दुर्लभ संयोग हम उसके लिये जुटा दें।**

हमें यह भ्रम तो कदापि नहीं है कि मात्र एक बार सुन लेने से उन्हें तत्त्व की ये गूढ बातें समझ में आ जायेंगी और उनका कल्याण हो जायेगा; पर हाँ ! यह तय है कि जिसने एक बार भी यह बात सुन ली वह इतना तो समझ ही जायेगा कि **''अहो ! यह तो अद्भुत बात है, यह तो अलौकिक बात है, ऐसी बात तो मैंने आज तक सुनी ही नहीं, यह मेरे अपने हित की बात है, मात्र तात्कालिक नहीं वरन मेरे त्रैकालिक हित की बात है।''**

बस ! किसी को इतनी बात समझ में आ जाए तो हमारा काम हो गया, आगे का काम तो वह स्वयं कर लेगा।

उक्त योजना को प्रभावशाली ढंग से लागू करने के लिए हमने एक किट तैयार किया है, जिसमें निम्नांकित सामग्री उपलब्ध है–

1. प्राथमिक ज्ञान हेतु पुस्तकें
2. पारिभाषिक शब्दों के परिचय हेतु पुस्तक
3. विभिन्न विषयों पर सरल भाषा में प्रवचनों की सी.डी.

हमारी अपेक्षा है कि इस मार्ग के नव आगंतुक को आप यह किट उपलब्ध करवा दें।

उक्त सन्दर्भ में आप सभी के उपयोगी सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

सभा के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि श्री निहालचंदजी जैन जयपुर थे। इसके अतिरिक्त डॉ. श्रीयांसजी सिंघई, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री विनोदकुमारजी जैन कोटा भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर जयपुर के सभी स्नातक विद्वान परिवार सहित उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, मंगलाचरण पण्डित करणजी शाह ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित संजयजी सेठी ने किया।

(2) देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की जन्मजयन्ती तिथि के अनुसार दिनांक 28 अप्रैल से 2 मई तक मनाई गई।

इस अवसर पर ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, ब्र. कैलाशचंदजी अचल ललितपुर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन द्वारा दिनांक 26 अप्रैल को रवीन्द्र नाट्य गृह में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्म जयन्ती अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ मनाई गई।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री रसिकलाल माणकचंद धारीवाल पूना, श्री मुकेशजी जैन इन्दौर, श्री कविनभाई पारीख मुम्बई, श्री प्रवीणभाई वोरा मुम्बई, श्री अशोकजी घीया मुम्बई, श्री विपिनभाई बादर जामनगर, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती शोभा धारीवाल पूना इत्यादि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगल गायन व गुरुदेवश्री के जीवन पर आधारित वीडियो दिखाया गया। अतिथियों के सम्मान एवं मंगलाचरण के उपरान्त पण्डित अभयजी शास्त्री द्वारा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का परिचय दिया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने स्वामीजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए क्रमबद्धपर्याय और त्रिकालीध्रुव भगवान आत्मा जैसे विषयों पर प्रकाश डाला।

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) की अगस्त 2014 में आयोजित होने वाली ग्रीष्मकालीन परीक्षा के खाली छात्र प्रवेश फार्म संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को भेजे जा चुके हैं। अत: शीघ्रताशीघ्र उन्हें भरकर भिजवा देवें।

कदाचित् डाक की गड़बड़ी से जिन्हें प्रवेशफार्म नहीं पहुंचे हों, कृपया तत्काल सूचना कर मंगवा लेवें। **– ओ.पी.आचार्य –प्रबंधक, परीक्षा बोर्ड कार्यालय, जयपुर**

जैनत्व बाल संस्कार शिविर संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट साधना नगर द्वारा दिनांक 4 से 11 मई तक जैनत्व बाल संस्कार शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ के अतिरिक्त टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, आचार्य अकलंक महाविद्यालय ध्रुवधाम बांसवाड़ा व आचार्य धरसेन दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा के विद्वानों द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

इस शिविर में लगभग 700 से अधिक बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। इस अवसर पर बालबोध पाठमाला से लेकर छहढाला व नयचक्र आदि अनेक विषयों की कक्षाओं का संचालन किया गया।

शिविर में महिला मण्डल व यंग जैन प्रोफेशनल के सभी युवा साथियों का बहुत सहयोग रहा।

अन्तिम दिन समापन समारोह के अवसर पर मंच संचालन करते हुए श्री विजयजी बड़जात्या एवं श्री पदमजी पहाड़िया ने सभी का आभार प्रकट किया।

शोक समाचार

(1) सोनगढ (गुज.) निवासी श्री कान्तिभाई भायाणी का दिनांक 24 अप्रैल को 89 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया।

आपने गुरुदेवश्री की उपस्थिति में 19 वर्षों तक श्री दिगंबर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ के मैनेजर के रूप में अपनी सेवाएं दी थीं। परमागम मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव में 108 विशिष्ट सहयोगियों में से एक होने के कारण आपको स्वर्णचन्द्रक प्रदान किया गया था। भारत के दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों की छोटी से छोटी बातों को आपने **'श्री दिगंबर जैन तीर्थदर्शन'** नामक पुस्तक में संकलित किया।

(2) करेली (म.प्र.) निवासी श्रीमती गेंदाबाईजी जैन धर्मपत्नी पण्डित कपूरचंदजी जैन (केसलीवाले) का दिनांक 1 मई को धर्म आराधना पूर्वक वैराग्य भावना भाते हुये देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

हार्दिक बधाई

खड़ैरी–दमोह (म.प्र.) निवासी चि. सौरभजी शास्त्री पुत्र श्री खेमचंदजी जैन का दिनांक 27 अप्रैल को **बांसा निवासी सौ.का. स्वाति जैन** के साथ शुभविवाह संपन्न हुआ। एतदर्थ जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 500–500/– रुपये प्राप्त हुये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सिद्धभक्ति

20 सातवीं पूजन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब जयमाला के छन्दों का अर्थ आरंभ करते हैं। जयमाला के आरंभ में एक दोहा है; जो इसप्रकार है ह्न

(दोहा)

रत्नत्रय भूषित महा, पंच सुगुरु शिवकार।
सकल सुरेन्द्र नमें नमूँ, पाऊं सो गुणसार।।१।।

रत्नत्रयरूपी आभूषणों से पूरी तरह विभूषित पंचपरमेष्ठी भगवान कल्याण करनेवाले हैं। उन पंचपरमेष्ठी भगवन्तों को स्वर्गों के सभी इन्द्र नमस्कार करते हैं। मैं भी उक्त पंचपरमेष्ठियों को नमस्कार करके सारभूत गुणों की प्राप्ति करना चाहता हूँ।

हम आरंभ से ही देखते आ रहे हैं कि सिद्धों की पूजन के इस आयोजन में, सिद्धचक्र की पूजन में लगभग प्रत्येक जयमाला के आरंभ में पंचपरमेष्ठियों को स्मरण करते आ रहे हैं। कभी–कभी तो लगता है कि यह सिद्धचक्र विधान है या पंचपरमेष्ठी विधान है।

इस सातवीं पूजन में तो पाँचों परमेष्ठियों को सौ–सौ अर्घ्य चढ़ाये जा रहे हैं।

कविवर सन्तलालजी समय–समय पर यथास्थान यह स्पष्ट करते आ रहे हैं कि यदि हम सिद्धों में सभी परमेष्ठियों को शामिल नहीं करते तो सिद्धों की इतनी बड़ी पूजन में सिद्धों के किन गुणों को स्मरण करते?

यह सातवीं पूजन वही पूजन है, जिसमें साधुओं को सिद्धों के समान बताया गया है। अनेक छन्दों में कहा गया है कि ह्न

मैं नमूँ साधु सम सिद्ध अकम्प विराजे

इस पंक्ति को कवि ने अचरी के रूप में ४७ बार दुहराया है। इसी पंक्ति से प्रभावित होकर मैंने देव–शास्त्र–गुरु पूजन की जयमाला में सन् १९५७ में लिखा था कि ह्न

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु चरणों में शीश झुकाते हैं।
हम चलें आपको कदमों पर नित यही भावना भाते हैं।।

इसी पूजन में मुनिराजों को मुक्ति की साधना करनेवाला कहा है और मोक्षमार्ग और मोक्ष का श्रेय साधुओं को दिया गया है।

जिन पंक्तियों में ये बातें कही गई हैं, वे पंक्तियाँ इसप्रकार हैं ह्न

१. साधुभये शिव साधन हारे।

२. सो सब साधु वरें शिवनारी।

३. मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं।

मात्र साधु परमेष्ठी ही नहीं; आचार्य, उपाध्याय परमेष्ठी को भी इसीप्रकार याद किया गया है।

एक स्थान पर तो उपाध्यायों को एक प्रकार से सिद्धों में ही शामिल कर लिया गया है।

पाठक गुण संभवे सिद्ध प्रति नमन हमारा।

आगे के अधिकतर छन्द पद्धरि छन्द में लिखे गये हैं। उनमें से आरंभिक छन्द इसप्रकार है ह्न

(पद्धरि छन्द)

जय महा मोहदल दलन सूर, जय निर्विकल्प आनन्दपूर।
जय द्वैविध कर्म विमुक्त देव, जय निजानन्द स्वाधीन एव।।२।।

हे भगवन् ! आप महामोहरूपी राजा की सेना को पराजित करने में शूरवीर हैं। आपकी जय हो। हे भगवन् ! आपमें निर्विकल्प अतीन्द्रिय आनन्द की बाढ़ आ रही है। आपकी जय हो। हे भगवन् ! आप द्रव्यकर्म और भावकर्म ह्न इन दो प्रकार के कर्मों से मुक्त हो गये हैं; अत: आपकी जय हो। हे भगवन् ! आप स्वाधीन निजानन्दमय ही हैं। आपकी जय हो। जय हो, जय हो।

अगला छन्द इसप्रकार है ह्न

(पद्धरि छन्द)

जय संशयादि भ्रमतम निवार, जय स्वामि भक्ति द्युति थुति अपार।
जय युगपत सकल प्रत्यक्ष लक्ष, जय निरावरण निर्मल अनक्ष।।३।।

हे भगवन् ! आपने संशय, विभ्रम और विमोहरूप अज्ञानांधकार का नाश कर दिया है; इसलिए आपकी जय हो।

संशय, विभ्रम और विमोह ह्न ये तीन ज्ञान के दोष हैं। इनके दूसरे नाम संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय भी हैं।

दो कोटियों में ज्ञान का झूलना **संशय** है। जैसे ह्न यह बगुला है या ध्वजा ह्न पताका।

उल्टा निर्णय हो जाना **विपर्यय** है। जैसे ह्न है तो ध्वजा और मान लेना बगुला।

अनिर्णय की स्थिति में रहना **अनध्यवसाय** है। होगा कुछ ह्न ऐसा सोचना।

ये तीनों सम्यग्ज्ञान के दोष हैं और आपने इनका निवारण कर दिया है; इसलिए आपकी जय हो, जय हो।

हे स्वामी ! आपकी भक्ति, आपकी द्युति और आपकी स्तुति ह्न ये अपार हैं।

हे भगवन् ! आप इस सम्पूर्ण जगत को एकसाथ प्रत्यक्ष जानते हो; क्योंकि आपका ज्ञान निरावरण है, निर्मल है और इन्द्रियों

से उत्पन्न नहीं होता, आप सभी पदार्थों को सीधा आत्मा से ही जानते हैं, इन्द्रियों से नहीं; इसलिए आपका ज्ञान अनक्ष है, इन्द्रियातीत है, विकल्पातीत है।

अक्ष शब्द का अर्थ आत्मा भी होता है और इन्द्रियाँ भी होता है। अत: इस शब्द का अर्थ करते समय हमें प्रकरण के अनुसार यह देखना चाहिए कि यहाँ अक्ष शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है; अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

यहाँ भगवान के ज्ञान को अनक्ष कहा गया है। अत: यहाँ अक्ष का अर्थ इन्द्रियाँ होगा, आत्मा नहीं; क्योंकि सर्वज्ञ भगवान का ज्ञान इन्द्रियातीत होता है, आत्मातीत नहीं।

अगला छन्द इसप्रकार है ह्न

(पद्धरि छन्द)

जय जय जय सुखसागर अगाध, निरद्वन्द्व निरामय निर–उपाधि।
जय मनवचतन व्यापार नाश, जय थिरसरूप निज पद प्रकाश।।४।।

हे अगाध सुख के सागर भगवन् ! आप मानसिक द्वन्दों से रहित हो, शारीरिक बीमारियों से रहित हो और बाहरी उपाधियों से भी रहित हो।

मानसिक संकल्प–विकल्पों को **द्वन्द्व** कहते हैं, शारीरिक रोगों को **आमय** कहते हैं और बाहरी विपत्तियों को **उपाधि** कहते हैं। आप तीनों से रहित हो; इसलिए निर्द्वन्द्व, निरामय और निर–उपाधि हो; इसकारण ही सुख के सागर हो। इसलिए आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

मानसिक बीमारियों को **आधि** कहते हैं, शारीरिक बीमारियों को **व्याधि** कहते हैं और बाहरी तकलीफों को **उपाधि** कहते हैं।

आधि, व्याधि और उपाधि से रहित अवस्था को **समाधि** कहते हैं।

हे सिद्ध भगवन् ! आपने मन, वचन और काय के व्यापार (हलचल) का नाश कर दिया है; इसलिए आपकी जय हो। आप स्थिरस्वरूप निजपद के प्रकाशक हैं, प्रकाश के पुंज हैं। इसलिए आपकी जय हो।

पाँचवाँ छन्द इसप्रकार है ह्न

(पद्धरि छन्द)

जय पर–निमित्त सुख–दुख निवार, निरलेप निराश्रय निर्विकार।
निज में पर को पर में न आप, परवेश न हो नित निर–मिलाप।।५।।

हे भगवन् ! आपने पर अथवा निमित्त के आश्रय से उत्पन्न होनेवाले लौकिक सुख–दुखों का निवारण कर दिया है। इसलिए आप कर्मों के लेप से रहित हो गये हो, आपको पर के आश्रय की आवश्यकता नहीं रही हैं और आपके सभी विकार समाप्त हो गये हैं; इसलिए आप निर्लेप, निराश्रय और निर्विकारी हो गये हो।

यहाँ निर्लेप का अर्थ द्रव्यकर्मों से रहित है और निर्विकार का अर्थ भावकर्मों से रहित है।

न तो आप में पर का प्रवेश है और न पर में आपका प्रवेश है; अत: आप पर से नित निरमिलाप हो गये हैं। तात्पर्य यह है कि अब आपका पर से परस्पर कभी मिलाप नहीं होगा। तात्पर्य यह है कि **अब कभी भी आपको देहादि का संयोग नहीं होगा।**

यह अज्ञानी जगत अपने लौकिक सुख–दु:खों का कारण पर को मानता है, निमित्तों को मानता है; जबकि यह बात एकदम गलत है; क्योंकि कोई किसी के सुख–दु:ख का कारण हो तो स्वयं के द्वारा किये गये सभी कर्म निरर्थक हो जायेंगे।

आचार्य अमितगति कृत सामायिक पाठ में कहा है कि ह्न

परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं स्वयंकृतं कर्म निरर्थकं तदा

जीवन–मरण और सुख–दु:ख कोई किसी को दे सकता है ह्न यदि ऐसा माना जाये तो फिर स्वयं ने जो कर्म किए हैं; उनके फल का क्या होगा ?

तात्पर्य यह है कि प्रत्येक जीव के जीवन–मरण और लौकिक सुख–दु:ख स्वयं के पूर्वकृत कर्मों के उदय के अनुसार ही होते हैं।

छठवाँ छन्द इसप्रकार है ह्न

(पद्धरि छन्द)

तुम परम धरम आराध्य सार, निज सम करि कारण दुर्निवार।
तुम पंच परम आचार युक्त, नित भक्त वर्ग दातार मुक्त।।६।।

हे भगवन् ! आप परम धर्म के सारभूत आराध्य हो, दुर्निवार कारणों को हटाकर मुझे स्वयं के समान बना लो। आप पाँच प्रकार के उत्कृष्ट आचार से युक्त अर्थात् पंचाचार से युक्त आचार्य परमेष्ठी हैं और अपने भक्तों को मुक्ति देनेवाले हो।

इस छन्द में सिद्ध भगवान को आचार्य परमेष्ठी के रूप में देखा गया है। यही कारण है कि उन्हें पंचाचार से युक्त बताया गया है।

(क्रमश:)

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन
दिल्ली – शनिवार, दि.24 मई 2014 रात्रि 7.30 बजे से
अवश्य सम्मिलित हों

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद का सम्मेलन
रविवार, दि.25 मई 2014 रात्रि 7.30 बजे से
सदस्यगण अवश्य भाग लें

17 मई 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी

सत्य का निर्भीक प्रवक्ता एवं तत्त्वान्वेषी सन्त

– प्रकाश हितैषी शास्त्री, दिल्ली

आज जैन समाज का परम सौभाग्य है कि उसको अनेक दशकों पश्चात् एक सत्पथप्रदर्शक नि:स्वार्थी सन्त मिला, जिसने जैनागम के हार्द को समझकर देश-विदेश के लक्ष-लक्ष मानवों में ज्ञान की ज्योति जागृत की है और जिन्होंने धर्म का अन्त: रहस्य खोजकर हमारे समक्ष रखा है। जिसके फलस्वरूप पोपडमवाद का दिवाला निकल चुका है। धर्म की ध्वजा फरफर फहरा रही है, सत्य की देवदुंदुभि का तुमुल नाद सुनाई दे रहा है।

जिस सौराष्ट्र देश ने भारत की आजादी के लिये महात्मा गांधी जैसा राष्ट्रीय सन्त दिया उसी पावन भूमि सौराष्ट्र ने आत्मा की आजादी का सन्मार्गदर्शी पूज्य श्री कानजीस्वामी जैसा धार्मिक सन्त दिया है। इन दोनों सन्तों ने स्वार्थी तत्त्वों द्वारा बिछाये गये जाल और संकटों की ओर तक भी मुड़कर नहीं देखा। आज इस वैज्ञानिक युग में जनता सत्य और असत्य की परख करने लगी है। यही कारण है कि आज ज्ञान का दीपक एक से दूसरा प्रज्वलित होता हुआ प्रकाशित होता ही चला जा रहा है। अत: इस भौतिकवादी युग में भी यह चिर अध्यात्मवादी भारत देश सत्य की ज्योति से पुन: जगमगा उठा है।

आज जिसकी कृपा से मोक्षमार्ग की मूलभूत आध्यात्मिक तत्त्वचर्चा का इतना व्यापक प्रचार हो चुका है कि उसे समझने के लिये सहस्रों मानवों में तत्त्व की जिज्ञासु प्रवृत्ति जाग्रत हो उठी है। सैंकड़ों वर्ष के बाद सत्य का निर्भीक प्रवक्ता और तत्त्वान्वेषी सन्त इस भारत भूमि पर अवतरित हुआ है, जिसने आगम का रहस्य और आचार्यों के हार्द को समझकर जैन दर्शन का वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। अत: तत्त्वजिज्ञासुगण उस महान आध्यात्मिक सन्त के चिरकृतज्ञ रहेंगे।

मुझे भी उस सन्त की छत्रछाया में सत्य का प्रकाश मिला है, अतएव कृतज्ञतावश उनकी इस पावन हीरक जयन्ती के शुभावसर पर अपनी कोटि-कोटि श्रद्धांजलियां अर्पित करता हुआ शुभ कामना करता हूँ कि दीर्घकाल तक उनकी छत्रछाया में सत्य का दीपक प्रज्वलित होता रहे।[1]

1. हीरक जयन्ती अभिनन्दन ग्रन्थ (हिन्दी विभाग), पृष्ठ-51-52

ढाईद्वीप जिनायतन के शिखर का कार्य प्रारंभ

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में बनने वाले विशाल जिनालय के गुम्बदाकार डोम की छत का कार्य दिनांक 27 अप्रैल को प्रारंभ हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचन का लाभ मिला। प्रवचन के पूर्व प्रतिष्ठेय 100 रत्न प्रतिमाओं और 215 रत्नजडित जिनवाणी की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई।

इसके पूर्व दिनांक 24 व 25 अप्रैल को मल्हारगंज में रत्नत्रय विधान का आयोजन हुआ। साथ ही तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित –

48वाँ आध्यात्मिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 18 मई 2014 से 4 जून 2014 तक

मुखर्जी सी.सै.स्कूल, पी एण्ड एन पॉकेट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली में

अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हों व अन्य लोगों को भी प्रेरित करें

संपर्क सूत्र – श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर

और अब दिल्ली में भी –

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का 125वाँ जन्मजयन्ती समारोह

रविवार, दि.25 मई 2014 प्रात: 9.15 बजे से

अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हों

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127